मेरा गीत दिया बन जाए

अँधियारा जिससे शरमाए
उजियारा जिसको ललचाए,
ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!

इतने छलको अश्रु, थके हर
राहगीर के चरण धो सकूँ,
इतना निर्धन करो कि हर
दरवाज़े पर सर्वस्व खो सकूँ।

ऐसी पीर भरो प्राणों में
नींद न आए जनम-जनम तक,
इतनी सुध-बुध हरो कि
साँवरिया खुद बाँसुरिया बन जाए!

ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!

मुरझा पाए फसल न कोई
ऐसी खाद बने इस तन की,
किसी न घर दीपक बुझ पाए
ऐसी जलन जले इस मन की।

भूखी सोए रात न कोई
प्यासी जागे सुबह न कोई,
स्वर बरसे सावन आ जाए
रक्त गिरे, गेहूँ उग आए!

ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!!

बहे पसीना जहाँ, वहाँ
हरयाने लगे नई हरियाली
गीत जहाँ गा आए, वहाँ
छा जाए सूरज की उजियाली।

हँस दे मेरा प्यार जहाँ
मुसका दे मेरी मानव-ममता
चंदन हर मिट्टी हो जाए
नंदन हर बगिया बन जाए।

ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!!

उनकी लाठी बने लेखनी
जो डगमगा रहे राहों पर,
हृदय बने उनका सिंघासन
देश उठाए जो बाहों पर।

श्रम के चरण चूम आई
वह धूल करे मस्तक का टीका,
काव्य बने वह कर्म, कल्पना
से जो पूर्व क्रिया बन जाए!

ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!!

मुझे श्राप लग जाए, न दौड़ूँ
जो असहाय पुकारों पर मैं,
आँखें ही बुझ जाएँ, बेबसी
देखूँ अगर बहारों पर मैं।

टूटें मेरे हाथ न यदि यह
उठा सकें गिरने वालों को,
मेरा जीना पाप अगर
मेरे होते मानव मर जाए!

ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाए!!

–गोपालदास 'नीरज'